9th class hindi notes Chapter 12 शिक्षा में हेर – फेर

लेखक – परिचय

शिक्षा में हेर – फेर **-रवीन्द्रनाथ टैगोर**

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म बंगाल के प्रसिद्ध टैगोर वंश में 1861 ई . में कोलकाता में था । इनके पिता महर्षि देवेंद्रनाथ थे । टैगोर परिवार अपनी समृद्धि , कला , विद्या एवं संगीत के लिए संपूर्ण बंगाल में प्रसिद्ध था । टैगोर को अपने पिता से देशभक्ति , विद्वता , धर्मप्रियता , साधना आदि गुण उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुए । वे अपने भाई – बहनों में सबसे छोटे थे । उन्होंने अपने यश से न केवल टैगोर परिवार वरन् संपूर्ण देश को गौरव प्रदान किया । टैगोर को सर्वप्रथम ऑरिएण्टल सेमिनरी स्कूल में भर्ती किया गया परंतु इनका मन वहाँ नहीं लगा । इस कारण इनका कुछ महीनों के बाद नॉर्मल स्कूल में दाखिला दिलाया गया । इस स्कूल में उन्हें कुछ कटु अनुभव प्राप्त हुए जिसके परिणामस्वरूप आगे चलकर आजीवन शिक्षा सुधार के लिए प्रयास किया और आदर्श शिक्षा संस्था के रूप में 1901 ई . में शांति निकेतन की स्थापना की जो आज विश्व भारती विश्वविद्यालय के नाम से प्रख्यात है । 1878 में टैगोर अपने भाई के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंगलैंड गए । परंतु टैगोर वहाँ अधिक दिनों तक नहीं रहे । 1880 में वे स्वदेश लौटे । 1881 में पुनः इंगलैंड गए । वे वहाँ कानन की शिक्षा प्राप्त करने के ध्येय से गए थे परंतु विचार परिवर्तन के कारण पुनः वापस लौट गए ।

1901 में टैगोर ने बोलपुर के निकट शांति निकेतन की स्थापना की । उन्होंने इसमें स्वयं अध्यापक के रूप में कार्य किया । यह विद्यालय आध्यात्मिक उदारता एवं विभिन्न संस्कृतियों के संगम – स्थल के रूप में दिन – प्रतिदिन उन्नति करता गया । 1919 ई . तक टैगोर ने राजनीति के क्षेत्र में भी कार्य किया । जलियाँवाला बाग हत्याकांड के उपरांत औपनिवेशिक सत्ता से विक्षुब्ध होकर इन्होंने ' नाइट हुड ' की उपाधि लौटा दी । वे साहित्य की सेवा अनवरत रूप से करते रहे और महान् कवि एवं साहित्यकार के रूप में उनकी ख्याति देश की सीमाओं को पार कर गई । रवींद्रनाथ टैगोर रहस्यवाद से प्रभावित कवि एवं चिंतक थे । 1913 में ' गीतांजलि ' पर नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ । इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से पाश्चात्य जगत् को भारतीय सभ्यता – संस्कृति से प्रभावशाली ढंग से परिचय कराया । पाश्चात्य जनजीवन और मूल्यों को भारत ने भी उनके माध्यम से समझने का प्रयास किया ।

प्रमुख कृतियाँ –

मानसी (1880) -काव्यसंग्रह , शिल्प विधान की दृष्टि से बंगला काव्य में नवीन प्रयोग । सोनारतरी (सोने की नाव) (1893) काव्यसंग्रह , चित्रा (1896) -काव्यसंग्रह , चैताली (बेर की फसल) (1896) -काव्यसंग्रह , कल्पना क्षणिक (1900) -काव्यसंग्रह , काव्य नाटक चित्रांगदा (1892) और मालिनी (1895) । कहानी संग्रह – गल्प गुच्छ (1912) ।

कहानी का सारांश

' शिक्षा में हेर – फेर ' विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित निबंध । नोबल पुरस्कार से सम्मानित टैगोर एक साहित्यकार होने के साथ – साथ उच्च कोटि के शिक्षाविद भी थे । शाति निकेतन (विश्व भारती) के माध्यम से उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में कई मौलिक प्रयोग भी किए थे । इस निबंध से उनकी शिक्षा – संबंधी दृष्टि का पता चलता है ।

जीवन की आवश्यकता में बंध कर रह जाना मानव – जीवन का धर्म नहीं है । मनुष्य कुछ हद तक आजाद भी हैं । शिक्षा के विषय में भी यही बात लागू होती है । बच्चों को आवश्यक शिक्षा के साथ स्वाधीनता की सीख भी मिलनी चाहिए । पढ़ाई , के साथ – साथ मनोरंजन भी जरूरी है । विदेशों में बच्चे जब अपने नए दाँतों से बड़े आनंद के

https://www.evidyarthi.in/

साथ ईख चूसते हैं तब हमारे देश में बच्चे विद्यालय के बेंच पर अपनी दो दुबली – पतली टाँगों को हिलाते हुए मास्टर के खेत हजम करते हैं ।

शिक्षा व्यवस्था के बचपन से ही आनंद के लिए जगह होनी चाहिए । विद्या कंठस्थ करने से छात्र का काम भले चल जाता है पर इससे उसका विकास नहीं होता है । आनंददायक तरीके से पढ़ते रहने से पठन शक्ति बढ़ती है , सहज – स्वाभाविक नियम से ग्रहण शक्ति , धारणा शक्ति और चिंता – शक्ति भी सबल होती है । अंग्रेजी विदेशी भाषा । शब्द विन्यास और पद विन्यास को दृष्टि से हमारी भाषा के साथ उसका कोई सामंजस्य नहीं है । इसे धारणा उत्पन्न करके पढ़ना चाहिए । रट कर सीखना बिना चबाये अन्न निगलने की तरह है ।

बचपन से ही भाषा – शिक्षा के साथ भाव – शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए । भाव के साथ पूरी जीवन – यात्रा नियमित रहने पर जीवन के यथार्थ में सामंजस्य बनाता है । जीवन का बड़ा हिस्सा हम जिस शिक्षा को सीखने में व्यतीत करते हैं उसका जीवन में कोई उपयोग न हो तो बड़ी कठिनाई होगी । लोगों के मन में अपनी मातृभाषा के प्रति दृढ़ संबंध होना चाहिए तभी वे जीवन में सफल होंगे ।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/